

नगर्न॥ ३ ॥ सुग॥ वहाहीषा
पाहुमसुकैवाग्रनन्दन॥
हीनपाहुमलावीआफ्रवा
मक्षनिगङ्गिन॥ ४ ॥ नष्ट
कूआरुनि॥ पाहुदुर्वग
ममलावन॥ कयालीक
धूमनेत्रपाहुशीनामकिं
कनी॥ ५ ॥ नासाग्रमऊना
सुन॥ पाहुवकुंरुनिद्वन॥
। पाहुक॥ ६ ॥ चद्रेयानि॥ स्त
॥ क्षीपाहुसुनाचिन॥ ७ ॥
हुजीपाहुमहानजा॥ कनी
हुननगमध॥ नखान्नरवा
धूम॥ खाहु॥ कक्षीपाहुकवि
धन॥ ८ ॥ ॥ ककर्मपाहुम

नाथिअकेन सखाकानेअ
 यन्नन॥ यनअसन्नकिंला
 हवो॥ गपिग॥ सर्वग॥ शुर्
 ॥ ग॥ ग॥ वाद्रुसूक्ष्म॥ का
 ॥ ग॥ ग॥ मिअलअग॥ सर्व
 कामानवाअमि॥ सखिधीर्
 मखाधिर्ग॥ २३॥ ॥ २५॥
 ॥ गिधीवक्रमयना॥ गानान
 रुमगसामिवा॥ नामअ
 केरुनमनकवर्दीसमा
 र्क॥ ॥

॥ नम॥ गीजन्नेअ॥ ॥ अ॥
 नि॥ याननकनीवनारुय
 कनीकाणीयनाभी॥ यनी
 कि॥ न॥ हि॥ क॥ वा॥ व॥ न॥ म॥ न॥

गी॥ न॥ अ॥ न॥ हि॥ न॥

ग॥ ग॥ ग॥ ग॥ न॥ य॥ ॥ ग॥ ग॥ ग॥ ग॥
 ॥ ग॥ ग॥ ग॥ ग॥ न॥ वि॥ वि॥ वि॥ वि॥
 न॥ क॥ नी॥ रु॥ मा॥ म॥ न॥ द॥ म॥ न॥
 म॥ क॥ ला॥ न॥ वि॥ वि॥ वि॥ वि॥
 न॥ स॥ रु॥ व॥ अ॥ उ॥ क॥ स॥ न॥ न॥
 । क॥ म॥ मी॥ न॥ ग॥ न॥ न॥ । सि॥ निर्ग॥
 न॥ य॥ न॥ का॥ धी॥ य॥ ना॥ धी॥ य॥ नी॥
 हि॥ द॥ ॥ २॥ ॥ आ॥ ग॥ न॥ न॥ क॥
 नी॥ नि॥ य॥ रु॥ य॥ क॥ नी॥ ध॥ म॥ क॥
 नि॥ द॥ य॥ नी॥ य॥ रु॥ क॥ न॥ न॥
 ला॥ स॥ मा॥ न॥ ल॥ रु॥ नी॥ । गे॥ ला॥ क॥
 ल॥ द॥ का॥ नी॥ । स॥ धे॥ य॥ यो॥ क॥
 नी॥ न॥ य॥ रु॥ ल॥ क॥ ली॥ का॥ धी॥
 य॥ ना॥ धी॥ य॥ नी॥ । हि॥ द॥ ॥ ३॥
 के॥ ला॥ ध॥ य॥ ल॥ क॥ न॥ न॥ न॥
 य॥ क॥ नी॥ । गे॥ मी॥ रु॥ मा॥ धी॥ क॥

नी क्रोमानिनिगमार्थेण
 यनेकनीश्वकानवीक्राद्
 नी। स्वगोदानकपागपाग
 नकनी काशी यना भीष्यनी
 हिद्वा॥ ४॥ दस्य दस्य यरु
 णावनकनी वक्राष्टुर
 (गु) दली लीला नाटकस्
 यधननकनी विज्ञानदी
 पांकनी। शिवि (व्यसं) मन
 ४ व्यभादिगकनी काशी
 पुना भीष्यनी हिद्वा अहि
 कपावर्णवगानीमाना
 नय (गु) श्यनी॥ ७॥ अन्न
 पूर्य सनाय (गु) श्वभया
 वावन्नय। कानवेना कृति
 अर्थ हि द्वा अहि यथा

वेनि॥ अं निधीक नश्चाये
 विनश्चिरीयव नत्तसमा
 प३॥ ॥

२ कुं नमानिनीजनाय॥ स्म
 नीनमानिनय नाद विन्दु
 नरीनअजानवधमवधुवधु
 दसी नदखानधु निनधु
 णा नस्मिनमाध वनिनअध
 नाय॥ १॥ (व्यसं) नदीनी
 ननकीनअर्गं हेमन्नरु
 यीनयवधुवधु वीदाके
 वद्विउरयनअरु सि गसि
 न॥ २॥ अन्न ननु द्वेनादि
 वनशक्ति नानीनय सानं
 यमि गम हि वक्राननं

मकुटजटा (षीषर्नय नु
 विमर्गं दृढं दीर्घका
 यं विरुक्तनखमस्य द्रुवि
 नर्गजानं यथयथाय
 नासं प्रधामनसगर्भे न
 वरुणलाते ॥ १ ॥ नर्नर्न
 नक्रवर्णं कटकटनयनं
 दूनलक्ष्मकनालं हृदि ह
 धास्यथासं मरुमरुमरु
 नद्यानथानादुनादं कं
 कंकलमूर्ध्नि धिगिधिति
 धिगिर्गन्धिनं कोषवर्धनं
 नर्नदीवारुर्न प्रधामन
 ॥ २ ॥ लर्लर्ललासर्न
 सुललिगल्लिगं दोष

डिक्काकलानं धुंधुंधुंधु
 मवर्णं सन्निगकलकं
 ललासर्न शोभनयं न
 नूनं नूनुमाला नोक्तन
 धिनमस्य प्रमभेयंकला
 नर्नर्नर्नक्रनयं प्रध
 मग ॥ ३ ॥ वयवयवायुव
 गं वलनयवनिगर्गं शोभ
 नयस्वनयं धुंधुंधुवाम
 रुसं मिश्रवगनिनर्कं
 लनयंकलानं यथयथं
 कोचर्नर्नं चननिचनव
 नैरुगवन्नावनाक मीम
 मीमायनयं प्रधामन ॥
 ४ ॥ सीसीसीखरुसं

शिकत्रधवनं, वाग्निसंयुक्तं, ममीमं मायमायाकूट
मकूलकनं, मंजुमूर्तिं सु, ननं, धीर्धधं धूत्रनाथं, किंवि
किंविगवनं, गृह्णगृह्णं नूत्रनं, जूंजूंजूंजूंनूत्रनं, यद्यम
ग॥ ५॥ कंकंकं काननं, धगधगधगीनं, कालकालाध
कारं, दूदूदूदूदूयवगं, दहदहदहनं, नयसं दिव्यमानं,
दूदूदू कालनादं, असूत्ररुचकनं, सिद्धिदं साधकानां,
नूद (लोम) नूत्रनं, यद्यमग॥ ६॥ हं हं हं दिव्यागी, सक

नसूलगना, दीवरागायसुनं, पंथपंथपन्नारं, हविह्व
धुवनं, वन्दसूर्यादिनार्थं (हं) उं उं वय्यनार्थं, सकलसूत्र
गना, दीवरागायसुनं, पंथपंथपन्नारं, हविह्वधुवनं
वन्दसूर्यादिनार्थं (हं) उं उं वय्यनार्थं, सकलसूत्रगना, सि
द्धिगन्धर्ववगं, नूत्रनं, नूत्रनं, यद्यमग॥ ७॥ हं हं हं
सहं सं, कदकदकदकलामूर्ति, धावाहल (हं) उं उं उं उं
नयं, कनित्रजिमुखं, खर्गखर्ग, धनं, नूत्रनं, नूत्रनं

गं प्रहृतिवदनीयं गक शंकलालं सं सं सं स्वर्गनार्थं य
 दामनसुगरी नवद्वयपालं ॥ ८ ॥ रे नवाष्टकमिदं पूर्व
 अष्टपदं काव्यात्पुनः सर्वसिद्धिमवाप्नाति सर्वसुखनिवा
 तनी ॥ ॥ ॥ १० नमः ४ रुवा न्ये नमः ४ नगाभा
 नमा नानवधुर्नदागा नपूषानपूषी नरुथानरुर्ल नजा
 यानविरु नवृत्ति ममेव गतिस्त्वंगतिस्त्वमकारवाणी ॥
 ॥ नजानामिदानीं नवधायमानं नजानामिमनु नवधाय

900

ASHA ARCHIVES

ऊर्न न जानामि पूजां न न्यास जागं गतिस्त्वं ॥ २ ॥ खड्ग
त्रयात्र मदाद् ४ खरीली पपात ४ यका मीपला रीपमरु
४ कूमाया कूलरू ४ यवद्व ४ सदाहं गतिस्त्वं ॥ ३ ॥ न जाना
मि पूषं न जानामि गीर्थं न जानामि मूकालय म्वा किमन
न न जानामि रुक्मि वगम्वा पिमान गतिस्त्वं ॥ ४ ॥ यजुर्ग
न मेर्गं मरुर्गं सुनर्गं ग(६)र्गं दिनर्गं नि(६)र्गं वत्र म्वा न जा
नामि चान्यं सदाहं न(६)र्गं गतिस्त्वं ॥ ५ ॥ कूक मी कू संगी

कूवृद्धि ४ कूदाश कूलायान हीन ४ कूलावाललीन ४ कू
द्विक्वा कू सदाहं रुवाना गतिस्त्वं ॥ ६ ॥ विवाद विष्टाद
यमादय वास जलवान लपर्वन ४ गम्भ अत्र (६)र्गं न
(६)र्गं सदा मीपवाहि गतिस्त्वं ॥ ७ ॥ अना (६)र्गं दत्रिदा रुवा ना
गायका मरु श्री ६ दीन ४ सदाजा शुवकु ४ वियहि ४ प्रविष्ट
४ सदाहं रुवानी गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वभ कारुवानी ॥ ८ ॥ नृति
सुखा वा यविल विगं रुवाना सवर्क समाप ४ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते श्रीमहादेवे ॥ अंगद न ४ यूल क रूष ष ष माधुर्य
गीर्ण गंग (धव मूकूला रुन षं न मालं । अंगी कृ नाखिल विः
रू निनया झलीला । मंगल्य दा मुम म म गल द व ग या ॥ १
॥ मूर्द्धा मूर्द्धा विदध गी वदन मूत्रा न ४ ध म य या विनिहिः
गानि गगा गगानि । माला दृष्टा मधू क नीव महा लया सा
मधियं दद रुसा न स र ॥ २ ॥ आमीलि नाक्ष मधि

गम्य दू दामूकू न्द मानन्द मन्द विनिव समनं गगर्ण । आ
क क न स्ति न क नी नि क य द भ र्ण रू रू रू व ल म म रु र्ज ग ष
यां ग ष या ॥ ३ ॥ वा क न न म धू जि न ४ जि न को मुरु या लार्
वली वह त्रि णी म यां विरानि । काम य दारु ग व ना पि क दः
दू माला कल्या ष मा व ह रु भ क म लाल या या ॥ ४ ॥ नील म
दा तिल सि ना न स के ट रा नः द्वा ना ध न रू न नि या न छि दं ग

ॐ वागस्याऽसमस्तु जगतां महनीयमस्ति रुद्राणिमदिग
हसागत्रसरुवाया ॥ ५ ॥ प्रार्थयदं प्रथमं ४ खलु यत्पु
वात्संगल्यराजिमधूमाधिनिमन्म (धन) आयायनगदि
हमंगलमीकृनार्थमादालसास्तिमकवाकनकन्यकाः
या ॥ ६ ॥ विष्णुमन्त्रश्चत्रकविज्रमदानदक्षमानन्दहृदु
नमिकंसधूविद्विषापि। नूनिषीदहुमयिद्वदमीद्व

ॐ मिन्दीवनादनसहादनमिन्दिनाया ॥ १ ॥ ॐ स्वाति
समगयापिषयाननादाक् दृष्टातिपिषयपदनुपदंरुज
नादृष्टिऽप्रदृष्टकमलात्कनदीकिरुष्टात्पृष्टिकपीष्टमम
पृक्तनविष्टनाया ॥ ८ ॥ दद्यादयीनपवनादुविनाम्बुनाः
धामसिन्नकिंयनविहंगणि (हो) निष (धू) दृष्टकर्मयर्मम
पनीयचिनायदूनात्तानायद्यद्यिणीनयनांव्वार्ह

॥२॥ गीदवननिगनूधधजसून्दनीनिधकंरुनीनिधधि
 ॥६॥ प्रवन्नरुनि। सुष्टिस्त्रियलयसिद्धिसंस्त्रिगायेन
 स्मनमासुपूत्रधारुमवल्लये॥ १० ॥ नमासुनीलीकनिरा
 ननाथ नमासुदुग्धदधिरुमरुम्यो। नमासुसामामृगसा
 दनाथ नमसुनात्रायधवल्लराये॥ ११ ॥ नमसुपंकवूहर्म
 दिनाथ नमासुकारुस्वप्नसन्निहाये। नमासुपीनाम्वत्र॥

हिनाथ नमासुदात्रिदविनाशनोये॥ १२ ॥ नमसुकर्पूत्र
 कनांकिनाथ नमासुगीगांधुसमाननाथे। नमसुयद्व
 धज॥ ६॥ हिनाथ नमसुवृन्दात्रकवन्दिनाथे॥ १३ ॥ सुवन्नि
 यमुनिहिनमूहिनीवहं जयीमयीविशुवनमातनैत्रमां
 । रुवन्निगरवल्लधनधन्यारामिना निरंगनैसकलसमीहि
 गान्विगा॥ १४ ॥ सत्रसिजुनिलयसत्राजदुर्लभवल्लननां

शुकगन्धमाल्यः ॥ १३ ॥ रुगावनिहत्रिवन्तुमनाहू प्रियुव
नरुनिकनीयसीदमश्रू ॥ १३ ॥ यासायद्यासनसुयथ
लकटिनटीपदपणायनाक्षी गंहीत्रावरुनारिस्तुनरुवध
मिनाशुकवश्रुनीया ॥ लक्ष्मीद्विष्टो गऊं नु म्मादिगधस्वत्रि
नेऽस्त्रायिगाहमकूभू नित्यं सायद्यहसुवसुममगृहस
र्वमांगल्ययुक्ता ॥ १४ ॥ लक्ष्मीक्षीत्रसमृद्धनाऊननयांधीन

गधमध्वनी दासीरुगसमसुदववनिगांधे लाकूदीपांकू
गांधीमसुन्दकटाक्षलक्ष्विरुववक्षुन्द गंगधनां त्वां
लाकूकूटं विनीसनसिजांवन्दमूकून्दधियां ॥ १५ ॥ यद्य
विथयद्यनियद्यहसु यद्यालथयद्यदलायनाक्षी वि
ध्वविथविध्वममानूकूल्य त्वत्पादयद्यमपिसंनिधकां
॥ १६ ॥ गनाशुलक्ष्मीऽसुनसुन्दनस्य सर्वप्रणमणीजनवन्

रुस्य। कटाक्षयागनसमूलसंगी। वामाङ्गलक्ष्मीर्जननीजः
नानां॥ १२॥ माग ४ धीद्विलक्ष्मीरुद्यमपिमहनारावयई
वधुश्च। विद्याहीनापिदीनायमधरुत्रमित्रहेद्वक्त्रिः
रुत्रिर्ध ४ संयत्तासाद्यमाद्यद्विनदवत्रयमूत्रकुमाव
नृणांकि ४ सकदीर्पां सलोलांसकलवसूमर्नित्रकुवर्हि
मिरुर्हि॥ २०॥ लक्ष्मीविल्ववनकदम्बकूशुमद्विर्वाग

(ॐ) कूं ऊ न (ॐ) व न वा (ॐ) व न (ॐ) वृष व ध व ल कृष ध ऊ वाम न
 । (ॐ) ख य द्वा व न न न न न रु व न सिंहा स न (ॐ) कू ल स ह्य सो
 र्य गु (ॐ) स दा नि व स नि धी रुषू व द्वा कू ल ॥ २१ ॥ ॐ नि
 धी (ॐ) क ना चार्थ वि न वि न क न क ध ना ल द्वा मु नि स मा
 द्वा ४ ॥ ॥ ॥ १ कुं न भा ग (ॐ) श य ४ ॥ न व ल द्वा
 द्वा नि ना दा रि ना म ल स रू दि लं (ॐ) य वि द्या ल हा ना न

सुखाद्युवाद्युपत्यक्षगानं गद्यधीगमीगानसूनुतमीरु
॥ १ ॥ धनिधनवीधलयाद्रासवकुं सुलक्षुद्युद (द्युवः
नवीजयूनी। गलदय्यसो गमिलालाहिरामं गद्य ॥ २ ॥
यकागजयात्रकत्रलयसूनीयवालीयरुनात्रुद्युअनित
द्वं। यलम्भादनवकुहु (द्युकदन्तं गद्य ॥ ३ ॥ विविधसूः
त्रदलमाताकिनीटं किनीटालसूनुलखाविहूषी। विरु

येकरूपंरुच्यंशरुचुं गणधामिधामनूस्सुनूनमीउ ॥ ४ ॥
उदयैरुज्जुआवन्तवीदध्यमूलं वलकलगाविउमंराउ
दर्श।मनूनान्दनयश्चमने४सव्यमानं गण॥ ५ ॥ निम
रुकावकश्चमाधोद्यनाई सुनन्निष्ठनालालपिश्नादः
गानं।कृपाकामलादात्रलीलावगानं गण॥ ६ ॥ यमाध
यवर्ककमानन्दवर्क सुनहुजयूआनूदाश्चानिर्नदं।

कलादिन्दुगङ्गाय नियागितये गणेशं नमः सर्वत्र
मीठ ॥ १ ॥ यमकाय न निर्मनं निर्विकल्पं गुणमिगमं
नन्दमाकाशगुणं । यनयात्रभाक्षाननामायगर्ह्वद
नियगर्ह्वनादनमीठ ॥ ८ ॥ विद्वानन्दशीघ्राय नमः
यशस्यं नमाविष्वकर्षु बहर्षु बहुस्यं । नमानकला लाय
कवल्याहासं नमाविष्वक् । अयसीदशसूना ॥ २ ॥ ॐ मं

[illegible]

जयजयनी सुन्दरी की जयनी ॥ ॥ ॥ शुलभीमि
 ननामानि कथावस्य सदा प्रिय । शुलभी सदलं कुरु स
 मदाधानदीयन ॥ ॥ ॥

रिषा विरिषा वल्लुकरु निदासेन चिन्त विष्णु रु नि
 निवीन वरुचरुय काल लडय डय न क नि डिष्णु ॥ ड
 मली शनरु ड ल कणि विगी ड ल धनू विरु ड ल व क

[illegible]

५४०२

[illegible]

नष्टमसिस्त्रानाडास्त्र॥ ॥
 हुंसासस्य लोदभननादिशिथि
 मदिनेरुकासासुश्यास्यदव
 सानिदननरुपयकिअभा
 निदिनन्यादि॥ ॥ हुंजुं
 (नयपुरुषनयस्त्रालासा
 मायवनस्यगयस्त्रालाशम
 नगाभाडास्त्रालुहुंसाहिउ
 यस्त्राला॥ ॥ यविममिमादि
 ०सीसाभाजुहुस्त्राम॥ ॥
 हुंयदनुमानयुननासुव
 धुमवगदिदिविनयिपिसि
 गवदुनयनसुह०रुनि
 नगिकुनिकुनन॥ ॥
 हुंसाभधन०सामजुवेन
 मास०साभावीनकमपेधेद
 लानि सादधेविचधे०सुह

यस्त्रिहृष्टवगभादनादि
 सि॥ ॥ अवाकनादि॥ ॥
 रुपा॥ ॥ अवा॥ ॥ हुं (धवग (धवग
 सनधनरयादि॥ ॥ हुं निभाडा
 वदुयडा॥ ॥ ॥
 ह्यशसुश्याविम्वजानी॥ ॥ हुं क
 नकनविगसुश्याविम्वविम्व
 नसानिगिनमधयनिपय
 गामवागननरुहि॥ अमन
 कसुमसुहृममध्वेउदने
 रुगाहुंनकिदुनिगसर्वेसुश्या
 विम्वैरुजानि॥ ॥
 वदुविम्वजानी॥ अमन
 निगवदुविम्वविम्वानुमा
 नी, निम्वमधयनिपय (धुका
 यार्जिकनरुहि, सिगवसुसस

गामवागननरुहि॥ अमन
 कसुमसुहृममध्वेउदने
 रुगाहुंनकिदुनिगसर्वेसुश्या
 विम्वैरुजानि॥ ॥

रुद्राक्षं च धारयन् रुद्राक्षं च
विमर्शयेत्तु विमर्शयेत्तु ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ एतदाह्वानं ॥ म
हानि वराहानि द्वादशभुज
वर्गं लिंगमसिद्धिदगं
यथाह्वयि ॥ ॥

॥ अववाखलानी॥ ॐ
 निअवमयेयाथे हि न एगार्
 सेयरी। मीयेनी ४६। अगग
 यभा। रुवनि ५॥ निरुके ॥

मायर्को हि नग्गर्हसि यर्ग ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कालसु ४ प्रीत्यर्थं यथा
एव निष्पत्तिर्क ॥

मिलको धीरनजानी ॥ मिलको
 दनसिंहना निनपायलना
 यना ॥ मिलको दनजानना
 भारवनिभानिकी ॥ ल्वनिन
 वरवाना, पावनीजनअन
 भारककनह्वेनसमा
 दानिप्रयदुभ ॥

कुलाना॥ ॐ नमो भगवते
सर्वपापहर्त्रे नमः ॥
विष्णुसाधनं नमो भगवते
रुद्राय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
विष्णुसाधनं नमो भगवते

१ अथ अथर्वविद्याविधिः ॥ अथ
 ब्राह्मणकथं ॥ अथ आदि ॥
 अदिनिष्ठया न तन्मा निव ॥
 अथर्वविद्याय कलिं गम
 हवाय गच्छ पदं शुक्रस्य
 मां जानाया विष्मय नो रु
 य कटि लो गनय मम वरु
 ला मय म वरु लो रु
 यकाथय गच्छाया नो रु
 गाय न कवधुय का न र्मा
 तुल्यमानाय अदि ल्याय
 ॐ धनाय अदि नय विद
 वगाय ॐ न मा स नी सै मय
 स्वाहा ॥ विद न ॥ ॐ अथ
 धु ॥ अथ ॥ ॐ व धु व क व
 का ॥ न को ल ल स स मा नि ग

लो क नाथ उ ग दी व धा नि
 य क रु ला रु क न ॥ अथो र्मा ॥
 ॥ ॥
 १ साम न ल म न ॥ ॐ श्री न
 समुदा रु वाय क म न रु द
 धमं जानाया रु हि का न रु
 य अ ग य ग म जाय वै ध म
 गाय रु हि का न रु यो य रु
 रु य ग म यो ॥ ॐ न व रु य रु
 ग म स म य ग म य वि रु रु स
 सामा य रु मा य अ य य रु
 वि रु व गा य ॐ न मा स नी सै
 रु ॥ व द ॥ ॐ म रु द वा ॥ अथ ॥
 रु हि म रु य रु म न ल रु रु का
 धा य रु नि रु वि व ॥ ॐ धा रु
 आ हि रु रु रु स रु धा रु रु रु

॥ ॐ ॥

二

उर्मिगमनया नत्तिवृत्तिनिमित्तध
 र्दक्षमद्वयाय नक्षत्रायाः
 यत्तद्व्याख्यातनक्षत्रायाः
 द्वात्रिंशत्तथा यद्वातिजाया
 नक्षत्रवर्गस्य विनयादस्य
 मर्मगमनवगायतयैक्य
 नक्षत्रगमनाय हर्कनाय
 प्रियस्यैव वगायतयैक्य
 सनत्वात् ॥ यद ॥ उर्मिनि
 सत्त्वा ॥ यद ॥ गार्हपत्य
 धर्मावसमय ॥ ४ ॥ अग्नि
 जगिवातिर्यैक्यमात्रं
 नक्षत्रस्य ॥ ॥

वृक्षनक्षत्रं वैदूर्यं लो॥ मटल
॥ इन्द्राय नमः ॥ इन्द्राय नमः ॥
धनं धनं नमः ॥ इन्द्राय नमः ॥
इन्द्राय नमः ॥ इन्द्राय नमः ॥
इन्द्राय नमः ॥ इन्द्राय नमः ॥
इन्द्राय नमः ॥ इन्द्राय नमः ॥
इन्द्राय नमः ॥ इन्द्राय नमः ॥
इन्द्राय नमः ॥ इन्द्राय नमः ॥

वृहस्पतिश्च नक्षत्रप्रस्थानां
नामिदं धृष्टकेनाश्वक
दधर्मजानाश्वक्यस्तुषी

नरुजाय अमुगियसु (गमय) य
जातिवाक्क (गमय) दीनव (गमय)
यमल निमसयय, रुहस्यणि
दवर्ग, नेक, कुचन सेव रुहस्य
गिदवगायसुहना॥ वन॥ व
रुहस्यणि॥ मुण॥ सिदवलीकहि
काकालुह, शुशगा, मय, शुवडा
विशुशानवमदिमलानजान
शुनहमनिदययकुह॥ ॥

शुक्ल नक्षत्रं शुक्लं ॥ शीतं वरुणं
(१॥ शुक्लं वायुं नवम्यां जातं
यथा नक्षत्रं वायुं जातिव्याक्रमं
वामं (२॥ वरुणं वरुणं वरुणं
वरुणं शुक्लं वरुणं वरुणं

दुन्दुभेयकायहाकायभनी
 नृपत्यमिददगायस्यहा॥
 वल्लुंभन्नात्यदि॥भुया॥
 काहाकभन्दुसीकाहा॥सुदु
 वधुविदुविगहा॥निन्द
 उधानिर्दुद्वमनिद्वरागि
 वहा ॥

होनि इय नया नि ले ॐ नु नी
 ना ॥ सा ना ह्रुं (॥ १॥ हु वा य प्र
 वृ म्या डि ना य ॥ ना हि णी न न
 जा य का श य वा (॥ १॥ जा य ह्रि नि
 रा व र्ण म य का श य व स म य य ॥
 ने श य न र्ण व र्ण म य ति च्छ न
 स ॥ ने श य ना य ॥ रु मा य व्र ज
 पु ण मि ण व ना य स्वा हा ॥ ध न

कुंदाब्जाङ्गदी॥मुद्रा॥नीलाद्या
लेखलक्षमसिन्नाङ्गननीला
पिवा॥शनिश्चन्द्रग्रहधर्मसा
म्बदाशाभिर्द्वयचक्र॥

एनादुरयानन नालन ॥ मम
 यजद्वेभारुवाय पृथुमाध्व
 जगद्य रुगणी नम्रगयप
 णिन (ग) जग्य जगि श्रुदाय
 नीलवर्णय वासठ वमथ
 य नृद्वेवथ गमय छिचुन
 स नारुवकालाय सर्वय
 एभिठ वगाय स्वाहा ॥ वद
 ॥ कुंकयान हिदि ॥ भुग ॥ ज
 नसीवथ सर्वका (धम) नीलाधि
 नसमा विवा (धम) निठ द्यामि

॥ वा निरुधि मादुदयानुक्रमेण ॥

कथुया नन्विककेन ॥ ध्याय
द्वेणारेवायज्जमावास्याजि
गायज्जमहेनवनद्रुगायज्जमि
नीगमगायज्जमिशूद्रायाक्ष
सवर्णाय विष्णुमित्रमव
॥ कथुनवगायगमयति कुन
सकथुनवगाय विष्णुमुक्ता
यज्जमायणमिठवगास्याह
॥ वन ॥ कथुनकर्म ॥ सिन्दूरन
विनाकाना नत्वयद्वानिशा
विवाकगवा नकनगा ॥ क्षि
सदाशमिर्नृययकुतु ॥ ॥

अस्योया नन सन ॥ स्वद ॥

रुवाय, सुखलाजागय, सिनः
द्रुगाय, स्वस्यासिपगय, ॐ
भानय, डिमुसा, किमुरवय, ॐ
गवर्णय, सुफममयय, दि
नअमय, नमय, यमिठव
गाय, स्वाहा ॥ अठ ॥ ॐ गजमुस
॥ भुग ॥ ववर्णय, ववर्णय, नअवर्
की, किंनग, नवग, ला ॥ भमि, दि, न
नअव, निनि, सुवर्णय, मदि, सुव
जा ॥ ॥

ॐ नभानवग, लाय ॥ अवा
क, सुमस, का, ॐ, का, भय, यी, यी, म
लाय, गि, नभ ॥ नि, सुवर्णय, वृ, व
गमा, मि, दि, वा, क, न, ॥ न, मि, ॐ, रव
शुषा, ला, री, की, नो, नो, व, रसी,

[illegible]

यममलावीर्यं चन्द्रादि एवम
 देनी। सिद्धिका॥ गार्केसिद्धीं
 रिगार्केयवामाम्पदं॥ यत्नास
 क्रमसिकासिगाग्राग्रहन्मसह
 रिगोद्रीगोद्रीन्मर्कद्यानींकि
 छत्रवामाम्पदं॥ शुद्धीशान्नरु
 सिकाष्टं सुद्वेददेर्नमस्कृती। स
 द्योयसद्वेदवानां। जन्मद्वेनम
 म्पदं॥ ॐ ह्रीं भूर्भुवः स्वाहा॥
 यत्नादिभ्यनिमानवा॥ दिवावा
 यदिवानां। सभयविस्मय
 वा॥ सुधीनासर्वकायेष्वपीठ
 दर्शकायां। रुद्र। जगदिष्टगार्थं
 सिद्धार्थं नवग्रहयुग्मेनिर्गणं॥
 ॐ निनवग्रहभूर्भुवः स्वमाक॥

[illegible]

नथमथमवलगतमूनिवले
कमिणासुवेदुयनेरुसगक
रुकरकेनेथनरुनरुखव
खगुखवगुनियगिगिं विनरु
वक्रवक्रमनिरिक्सक्रसक्र
शीबालमा॥३॥दि केरुमनमरु
उदिगदिननप्रक्रगगद
रानमभादनीकमलकलम
लवदनदरुदरुदेयधरि
मक्रावलेअनिधलधलमद
मिगिनिवलेरुयमननमध
रुक्रगीरुदिरुअगगदेय
यनयनशीबाले॥४॥रुप्ररु
नथनरुयदुनिकनधरिग
ननिवानरुंगगगरुअरुनवा
नवानविद्याननरुखवलगदिकेन

दिन १

किं न व न व न श स्या किं हि वि
वर्धने स्म य न स न ग न य द्रु
मि ध न ध न धी द्या ल ॥ अ ॥ क न
क र्क क न क न न म नि कि कि
नी म र व स ॥ कि न म न स उ म्भे स न
व न न वा नि न क मि नी म न म
हि म व न न वि व व वा न वि न
व न क षा व द्यी नि स ॥ नि धि ध स
न हि न हि य षा न क व न धी वा
ल ॥ ६ ॥ म न न म ल य नि क न
॥ षा ष स र व न टा र्क रु कि रु छ रु
या न मा ध व धा वि ना व द न
य र्क । क षि क षि वि ध न स
ना य क ॥ धी य नि उ ल सा य
क स उ रु य न म्भे न क ली ला
धी वा ल ॥ ७ ॥ र व न न वा ल ॥ मः

वा ल ॥ गो स न न स म र्द म र्द य न
क म र्द रु नि कि लि ष रु नि रु क
रं नि मि ष ध न य न क म र्द
शु नि स व न य व नि ष रु नि न व
द्वे क पा क र्क नि षी ॐ न य व
धी वा ल म रु न स रु न ॥ ८ ॥
ॐ नि वा ल म रु न स रु क स मा र्क
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१ ॐ न म १ धी रे न वा य ॥ न य
नी न श नी न वा मा रु का ली न
वी नान धी नो न वा सा ध के रु
१ न सा को न १ नि व १ न वा वे रु
वा वा व धू न १ दि दान न रु नू
पा रु मा ल ॥ १ ॥ वि रु नि दि

[illegible]

वा।
हृन्ना हि न एष ह एवा न नृगमि
पूवा क्र गा सु उ से वा। सम ए
एष ह्य नृगमभा द्वा ना वि
वकि विना जा व धूना म हृ
॥ दि ना रु सु रु पा म वा ह
वि न र्द्वा न हि सा द्वा मा ता सा
नि धर्मा न क षी ॥ य व ए म द
आ ता स दा द व व ना वि वि
हृ स म् क्ता व धूना म हृ ॥
५ ॥ नि उ हृ न य स्ये ता न्नि
हि ना न् य वि र्ग स मा न स्य र्ग
त रु ए ना स म् क्ता नृगम
उ ग त्म न्मा न वि ना उ व
धू ना व ना न य धर्मा न ॥ १ ॥
अ हं न य स्ये उ र्ग न व क्क

नादे वने वा गुरु वा समा भान
नाग ध्वना न ॥ समना स्व क
मो लल्ल धी वने सो वना ना
व धूना मरु धा ॥ ८ ॥ ॐ नि
हा जू व धू न हे न वा ह क सु
मा य ॥ ॥

ॐ न मा ह न म ना य ॥ ॐ न
स हा ह न म न क व व स ॥ ॥
ना म व नु म वि ॥ जू न धू धू न
॥ दी भा ह न मा न व ना मा नू
ना ल म ऊ नि वा ऊ जू स ऊ नी स
न नि नि धा कि ॥ ना म रु कि ॐ
नि वी ऊ ॥ ना मा म ॐ नि की ल क
॥ ह न म स्या ल ध वि नि अ ग

॥ ॥ अथा दाल दि त क न धि
नि नि र्द व नि द र्पो य र्द
व नु य म र्वा ल धी नि न य धा
॥ ॥ दी ल ना न नि धी ॥ सु गी
वा दी सम स वान न इ र्गि सु
वा क न ल धी र्गि स न क नू ॥
लो व न य व न ऊ पी ना न
ना ली क र्गि ॥ १ ॥ ॥ धी ना म व
नु उ वा य ॥ ह न मा नू व न
॥ वा रु द क न य व ना ल स ऊ
। वा रु द नी दि स र्वा ग य रु क
ध नी धि य न न न ॥ २ ॥ ॥ जू
ध स्या दि धू रु क सु य रु म
॥ अ य वा व नि ॥ ली का वि द
रु क ॥ वा रु स र्वा य र्वा नि